बुन्देलखण्ड क्षेत्र में सत्याग्रह आन्दोलन

डॉ0 अर्चना पाण्डेय*

विश्व इतिहास में भारतीय स्वाधीनता संग्राम का अपना विशिष्ट स्थान है। विभिन्न देशों के इतिहास में प्रायः देखा गया कि वह एक विशेष स्वरूप में प्रारंभ होकर उसी स्वरूप में समाप्त हुए है, यथा फ्रांसीसी–क्रांतिकारी आन्दोलन, अमेरिकी–संवैधानिक, रूसी–कम्युनिस्ट आन्दोलन आदि परंतु, भारतीय स्वाधीनता संघर्ष में मानो इसकी ''अनेकता में एकता'' के तत्व का वास्तविक रूप में समावेश दिखाई पड़ता है। क्रांतिकारी, संवधौनिक, समाजवादी आदि विभिन्न विचारधारा के राष्ट्रभक्तों ने विविध मार्ग अपनाया परन्तु अन्ततः सभी का एक ही लक्ष्य ''विदेशी सत्ता का विरोध'' उन्मूलन कर भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति रहा।

इसका एक महत्वूपर्ण पक्ष भारतीय ''सत्यागह–आन्दोलन'' रहा। जिसने किसी एक विशेष वर्ग, स्थान, क्षेत्र को ही न प्रभावित कर समस्त राष्ट्र को मानो विरोध का एक मनोनुकूल शस्त्र प्रदान कर दिया हो। उल्लेख्य हैं कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र का एक गौरवशाली अतीत और वीरतापूर्ण ऐतिहासिक परम्परा रही है। इसका प्राचीन एवं मध्यकालीन चन्देल एवं बुन्देला कालखण्ड में भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। लेकिन जब हम आधुनिक काल में देखते हैं तो बुन्देलखण्ड का इतिहास मात्र वीरांगना लक्ष्मीबाई, तात्याटोपे या नाना साहेब की गतिविधियों तक सिमटा हुआ प्रतीत होता है परन्तु यह विश्वसनीय स्थिति नहीं हो सकती । यह भारत के केन्द्र स्थित इसका ह्रदय प्रदेश है। इसकी भौगोलिक स्थिति के कारण राष्ट्र के किसी गतिविधि से अछूता रहना सम्भव नहीं है तथा इस क्षेत्र की गौरवपूर्ण स्वातंन्त्र्यप्रिय ऐतिहासिक परम्परा भारतीय स्वाधीनता संघर्ष में इसके केन्द्रीय भूमिका को स्वतः निर्धारित करती है। अतः इसी प्रकाश में यह शोध लेख लिखा गया है।

20वीं सदी के पूर्वाद्ध से ही भारतीय स्वाधीनता संघर्ष की गति निरंतर तीव्रतर होती चली जा रही थी। कभी शांतिपूर्ण संवैधानिक तरीकों से स्वतंत्रता का प्रयास चला तो कभी सशस्त्र संघर्ष का सहारा लेकर जनता ने ब्रिटिश शासन का विरोध किया। 1916 ई0 में गांधी जी का पदार्पण भारतीय राजनीति में हो चुका था। 1920ई0 के नागपुर अधिवेश में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस मे उन्हें अपना नेता चुनकर उनके निर्देशन में शांतिपूर्ण उपायो से स्वराज की प्राप्ति का संकल्प लिया।[1] उन्होंने भारतीयों को विरोध का ''सत्याग्रह'' नामक शस्त्र प्रदान किया जिसने संघर्ष की दिशा और दशा परिवर्तित कर दिया। आन्दोलन की धार को तीव्र करने के लिए गांधी जी ने देश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा किया। वहां जन सम्बोधन किया, जिससे लोगों में और अधिक जोश भर गया।

बुन्देलखण्ड क्षेत्र में जनता पर गांधी जी के विचारों का प्रेरणादायक प्रभाव पड़ा। इसकी विस्तृत अभिव्यक्ति, ब्रिटिश शासन के विरूद्ध प्रथम बार सन् 1920ई0 में दिखायी दी। सन् 1920 ई0 में जनता ने संगठित होकर शासन के विरूद्ध प्रथम बार मोर्चा लिया। इस आन्दोलन को रतौना सत्याग्रह के नाम से जाना जाता है। रतौना ग्राम सागर से 8 किमी0 पश्चिम में स्थित था। वहां पर अंग्रेजो ने कसाईखाना खोलने का पट्टा कलकत्ता की डेवनपोर्ट कम्पनी को प्रदान किया। इस प्रकार शासन द्वारा प्राप्त लाइसेंस के अंतर्गत 1400 पशुओं का वध प्रतिदिन किया जाता था।[2] इसी प्रकार का एक कसाईखाना दमोह में भी स्वीकृत हुआ था। इतनी बड़ी संख्या में पशुओं का वध होने से जनता उत्तेजित हो उठी और उसने अपना विरोध समाचार पत्रों के माध्यम से प्रकट किया। साप्ताहिक पत्र 'कर्मवीर' (जबलपुर) के सम्पादक पं0 माखन लाल चतुर्वेदी, 'वन्देमातरम्' के सम्पादक लाल लाजपतराय, उर्दू के समाचार पत्र ताज' के सम्पादक श्री ताजुद्दीन तथा श्री शारदा ने आवाज बुलन्द की।[3]

सन् 1920 ई0 में गांधी जी के असहयोग आन्दोलन से देशवासियों में नई प्रेरणा स्फूर्ति पैदा हुई। बुन्देलखन्द के राष्ट्रवादी गांधी जी के प्रेरक व्यक्तित्व के कारण स्वाभावतः इनके अहिंसात्मक आन्दोलन से प्रेरित हुए तथा शीघ्र ही स्वतंत्रता आन्दोलन में स्वंय को उन्होंने शामिल कर संघर्ष को गति

* **रैदोपुर मोहल्ला, आजमगढ़**

प्रदान की। 20वीं शताब्दी के दूसरे दशक से ही झांसी में कुछ राष्ट्रवादियों ने जिसमें हरनारायण गौरहार प्रमुख थे, इन्होंने मिलकर एक दल बनाना प्रारंभ कर दिया था। यही राष्ट्रवादी, गांधीवादी कहलाये। गौरहार जी गांधी जी से प्रेरित होकर अध्यापन कार्य छोड़कर स्थानीय मैक्डोनल हाईस्कूल (वर्तमान में विपिन बिहारी इण्टर कालेज, झाँसी) से अलग होकर अपने परम मित्र मास्टर रूद्र नारायण के साथ एक राष्ट्रीय विद्यालय बनाने का प्रयास कर रहे थे। इसके लिए झांसी में (संयुक्त प्रांत) राजनैतिक सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसके अध्यक्ष श्री सी0वाई0 चिन्तामणि बनाये गए। जहां सम्मेलन आयोजित हुआ था, वर्तमान में एस0पी0आई0 इण्टर कालेज, झांसी स्थापित है।[4] अहिंसात्मक–असहयोग आन्दोलन चलाने के लिए, राष्ट्रीय भावनाओं से ओत–प्रोत यह कॉलेज एक राष्ट्रीय विद्यालय में परिवर्तित हो गया और स्वराज प्राप्ति का प्रतीक बना यह विद्यालय बाद में कांग्रेस का प्रथम कार्यालय बना।

आन्दोलन को प्रोत्साहन देने हेतु गांधी जी विभिन्न क्षेत्रों में भ्रमण भी करते थे। इसी कड़ी में 30 नवम्बर 1920 को गांधी जी झांसी आये।[5] उनका आगमन इस क्षेत्र में स्वतंत्रता संघर्ष की विचारधारा को बढ़ावा देने हेतु सोने में सुहागा ही था। उनके साथ में शौकत अली थे। गांधी जी के स्वागतार्थ झांसी कांग्रेस के जनक रघुनाथ विनायक धुलेकर के नेतृत्व में झांसी नगर और हार्डीगंज को खूब सजाया गया व संध्या को भारी रोशनी की गई। यह देखकर सार्वजनिक सभा में गांधी जी ने कहा, जब तक खिलाफत का सवाल हल नहीं हो जाता, पंजाब में किए गए अत्याचारों का इंसाफ नहीं किया जाता और स्वराज हासिल नहीं हो जाता, तब तक किसी को खुशियों में शामिल नहीं होना चाहिए।[6] गांधी जी के साथ में श्रीमती कस्तूरबा गांधी, आचार्य कृपलानी और उनके पुत्र देवदास गांधी भी थे।

1920–21 के असहयोग आन्दोलन के तहत एस0पी0आई0 इण्टर कालेज, झांसी संघर्ष का प्रतीक बन चुका था। 1921–22 में इसी राष्ट्रीय पाठशाला में श्री धुलेकर और श्री खेर के प्रयत्न स्वरूप महात्मा गांधी आये। नगर वासियों को स्वतंत्रता के यज्ञ की आहूति के लिए प्रेरित किया। परिणाम स्वरूप मास्टर साहब ने अध्यापकी से तिलांजलि दे आन्दोलन में आगे आये। इसी विद्यालय (एस0पी0आई0 इण्टर कॉलेज झांसी) प्रांगण में गांधी जी की मौजूदगी में विदेशी वस्तुओं एवं वस्त्रों की एक होली जलाई गई थी और उनके नगर आगमन के पश्चात् गांधी जी को इसी और विद्यालय में ठहराया गया था।[7] मऊरानीपुर, चिरगाँव, बड़ागाँव के लोगों ने भी सक्रिय भागीदारी निभायी। बुन्देलखण्ड में गांधीवादी आन्दोलन के प्रमुख नेता श्री घासीराम ब्यास रहे जिनकी जन्म स्थली मऊरानीपुर में थी। असहयोग आन्दोलन के दौरान 1921 में इन्होंने मऊरानीपुर मे एक विशाल जुलूस निकाला जिसमें उनके अलावा रामनाथ त्रिवेदी, रामनाथ राव, छोटा पण्डा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, पन्नालाल अग्रवाल आदि प्रमुख रूप से शामिल थे। इस जुलूस को लाल बाजार में पुलिस ने घेरा डालकर रोक लिया तथा गिरफ्तार कर सभी को झांसी जेल में भेज दिया। इन सभी लोगों की गिरफ्तारी के बाद भी सत्याग्रह आन्दोलन की गति जारी रही।[8]

बांदा में राष्ट्रभक्तों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। आन्दोलन से प्रभावित होकर इस क्षेत्र के कई राष्ट्रवादी गणमान्यों ने स्वंय को अध्यापन कार्य से विरत कर, वकालत बन्द कर ब्रिटिश संस्थानों का त्याग कर विरोध जताया। पं0 लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री, नारायण प्रसाद, सुखवासी लाल, कुँवर जुगल किशोर नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और कुँवर हर प्राद ने वकालत बन्द कर दिया।

बांदा जिले के राष्ट्रवादियों का नेतृत्व पं0 लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री जी ने किया। इन्होंने अध्यापन कार्य से त्यागपत्र दे दिया और विदेशी सत्ता के विरूद्ध संघर्ष में सक्रिय योगदान दिया।[9] अनेक विद्यार्थियों ने बांदा के राजकीय स्कूलों से अपना नाम कटवा दिए। बांदा के राजकीय कन्या पाठशाला की अध्यापिका श्रीमती सावित्री देवी ने आन्दोलन में महिलाओं का नेतृत्व किया। फलतः सरकार ने उस स्कूल की ग्राण्ट बन्द कर दी। इसके बावजूद भी इन अध्यापिकाओं का मनोबल नहीं टूटा और वे लगातार गांधी जी के आन्दोलन में सक्रिय भाग लेती रही।

इस समय बांदा के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ने ''सत्याग्रही'' नामक पत्रिका निकालकर बांदा और हमीरपुर में आन्देलनकारियों का मार्गदर्शन भी किया।

ललितपुर क्षेत्र के देशभक्त नागरिकों और कांग्रेस के सिपाहियों पं0 नन्द किशोर किलेदार के नेतृत्व में ब्रिटिश शासन के खिलाफ जोरदार संघर्ष किया था। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया, विदेशी वस्तुओं की होली जलाई गयी, सरकारी संस्थानों के बहिष्कार के साथ–साथ विभिन्न जुलूस तथा

हड़तालों के माध्यम से सरकार के नीतियों के प्रति लोगों ने अपना रोष प्रकट किया। इसके कारण किलेदार जी, मुलई तिवारी, हरचंद तेली ललितपुर से तथा चिन्तामन महरौनी से गिरफ्तार किए गए।

इस आन्दोलन में सहभागिता को बढ़ावा देने के लिए 23 नवम्बर 1919 को गांधी जी उरई आये।[10] उनके साथ में राजर्षि टंडन तथा कस्तूरबा गांधी भी थी। गांधी जी ने ठड़ेश्वरी मंदिर के प्रांगण में तथा जालौन की बाजार की सार्वजनिक सभा में भाषण दिये। जिससे यहां के नागरिकों में भारी उत्साह और जोश पैदा हुआ। आन्दोलन की प्रासंगिकता को देखते हुए ही उरई क्षेत्र के पं0 मन्नीलाल पाण्डेय और बेनी माधव तिवारी ने बड़ी सक्रियता दिखाई। इस असहयोग आन्दोलन में पं0 चतुर्भुज शर्मा, कालीचरण निगम, मोती लाल शर्मा, बेनी माधव तिवारी, रामनारायण अग्रवाल, गौरी शंकर शुक्ला, धनराज पालीबाल, बेनी प्रसाद चौपड़ा गिरफ्तार हुए।

सन् 1923 ई0 में श्री देवेन्द्र मुखर्जी के सम्पादन में साप्ताहिक पत्र 'उदय' प्राकाशित हुआ, भाई अब्दुल गनी ने साम्प्रदायिक एकता वर्धन हेतु समालोचक पत्र निकला। 'उदय' तथा 'समालोचक' ने गांधी जी के असहयोग आन्दोलन का समर्थन किया।[11] इसी प्रकार सन् 1920 ई0 में बाबू बृज बिहारी मेहरोत्रा ने साप्ताहिक लोकमत चन्दी बाबू के सहयोग से निकाला।

सन् 1922 ई0 में 'झांसी समाचार' तथा सन् 1924 ई0 में कोंच (जालौन) से श्री बाबू राम गुप्त ने साप्ताहिक 'निर्भय' पत्र निकाला। इसी क्रम में सन् 1924 ई0 में श्री नंद किशोर ने स्वतंत्रता संघर्ष की धार को और तीक्ष्ण करने के लिए 'लोकमान्य' केसरी प्रेस बांदा से प्रकाशित कराया।

स्पष्ट था कि 1922 ई0 तक इस क्षेत्र में भी असहयोग आन्दोलन अपने चरम पर था। इतने समस्त राष्ट्र को, उसके प्रायः सभी क्षेत्रों को और सभी वर्गों को प्रभावित किया था। इसी मध्य 5 फरवरी 1922 ई0 को संयुक्त प्रान्त के गोरखपुर जिले में चौरी–चौरा नामक स्थान पर किसानों के एक जुलूस पर गोली चलाए जाने के कारण क्रुद्ध भीड़ ने थाने में आग लगा दी, जिससे एक थानेदार सहित 21 सिपाहियों की मृतयु हो गई। इस घटना से गांधी जी को बहुत दुःख हुआ तथा भय भी उत्पन्न हुआ कि जन–उत्साह और जोश में यह आन्दोलन हिंसक मोड़ न ले ले और स्थिति अराजक न हो जाय। अतः उन्होंने इस हिंसक घटना को अहिंसात्मक–असहयोग आन्दोलन की भावना के प्रतिकूल मानते हुए 12 फरवरी 1922 ई0 को बारदोली में कांग्रेस कार्य समिति की एक बैठक बुलाई जिसमें चौरी–चौरा काण्ड के कारण सामूहिक सत्याग्रह असहयोग आन्दोलन स्थगित करने का प्रस्ताव पारित कराया।

इस प्रकार असहयोग आन्दोलन यद्यपि स्थगित कर दिया गया तथापित राष्ट्रव्यापी स्वतंत्रता संघर्ष जारी रहा। इस दौर में संघर्ष को रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से सशक्त बनाने का प्रयास किया गया। यह भी सत्याग्रह का ही भाग था। पं0 लक्ष्मीनारायण अग्निहोत्री ने वर्धा आश्रम में जाकर रचनात्मक कार्यक्रमों की दीक्षा प्राप्त की और उसे बुन्देलखण्ड क्षेत्र में स्वदेशी वस्तुओं के निर्माण, प्रयोग को प्रोत्साहित कर स्वराज की ओर कदम बढ़ाया।

गांधी जी ने शासकीय नियमों की अवज्ञा का पुनः सत्याग्रह आन्दोलन सविनय अवज्ञा आन्दोलन के नाम से ''नमक कर'' का विरोध करते हुए प्रारम्भ किया। उन्होंने 12 मार्च, 1930 को साबरमती आश्रम से अपना ऐतिहासिक दाण्डी मार्च प्रारम्भ कर 6 अप्रैल 1930 को समुद्र तट पर नमक बनाकर कानून भंग कर सत्याग्रह किया। बुन्देलखण्ड क्षेत्र ने भी इसमें अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। झांसी में नमक सत्याग्रह को व्यापकता एवं तीव्रता प्रदान करने के लिए श्री रघुनाथ विनायक धुलेकर के नेतृत्व में 4 जत्थे बनाये गये। इसमे प्रथम जत्थे का नेतृत्व धुलेकर जी ने स्वंय किया। दूसरे जत्थे का नेतृत्व सीताराम भाष्कर, तीसरे का बिहारी शिवानी और चौथे जत्थे का नेतृत्व लक्ष्मणराव कदम ने किया। चारो जत्थों ने विभिन्न क्षेत्रों से आकर और चिरगांव के निकट ग्राम औपारा में सेठ नारायण दास चौदा के बाद में 29 अप्रैल 1930 को हजारो लोगों की उपस्थिति में नमक बनाकर सरकार के खिलाफ अवज्ञा व्यक्त किया परन्तु पुलिस द्वारा किसी को गिरफ्तार करने का साहस न हुआ।[12] इस नमक कर विरोधी आन्दोलन में गरौठा, गुरसराय और मऊरानीपुर की जनता ने भी बड़े उत्साह के साथ इसमें भाग लिया। भसनेह तालाब पर नमक कानून तोड़कर शासन के प्रति विरोध जताया। मऊरानीपुर उस समय से सत्याग्रह आन्दोलन का मुख्य केन्द्र बन चुका था, नमक कानून अवज्ञा गरौठा में काशी प्रसाद दूबे के नेतृत्व में 39 व्यक्ति जेल गए जिसमें रामसेवक रिछारिया, शालिगराम मिश्रा, पुक्खन बाबा विद्याधर, सीताराम तिवारी, मुन्नी लाल इत्यादि थे। किलेदार जी को भी नेतृत्व करने के कारण एक वर्ष की कड़ी सजा भुगतनी पड़ी। महिलाओं ने भी रानी राजेन्द्र कुमारी के नेतृत्व में अहिंसात्मक आन्दोलन में बढ़–चढ़

कर हिस्सा लिया आन्दोलन से पूर्व 'जरखरा' कस्बे में कांग्रेस सम्मेलन के समय ''महिला कांग्रेस सम्मेलन'' भी आयोजित किया गया था, जिसमें अरूणा आसिफ अली, पूर्णिमा बनर्जी (अरूणा जी की बहन), पार्वती देवी (लाहौर) डॉ0 राजेन्द्र कुमारी वाजपेयी, विद्यावती राठौर आदि ने भाग लिया। सम्मेलन की अध्यक्षता संयुक्त रूप से बालेन्दु जी की पत्नी किशोरी देवी व रानी राजेन्द्र कुमारी मगरौठ हमीरपुर ने किया था। इस सम्मेलन में देश के चोटी के राष्ट्रीय नेताओं–गांधी जी के अतिरिक्त पं0 नेहरू लाल बहादुर शास्त्री, पं0 कमलापति त्रिपाठी आदि ने भाग लिया।[13]

पं0 लक्ष्मीनारायण अग्निहोत्री के नेतृत्व में बांदा के लोगों को एक दिशा और गति मिली। उन्होने 12 अप्रैल, 1930 को बांदा स्थित खादी भण्डार से स्वंय सेवको का एक जुलूस निकाला। देशभक्त के गीत गाये, विदेशी कपड़ो की होली जलाये और ब्रिटिश सरकार मुर्दाबाद के नारे लगाये गए। रामलीला मैदान में नमक बनाकर नमक कर का उल्लंघन किया गया।[14] इस प्रकार की गतिविधियां बुन्देलखण्ड विभिन्न रियासती क्षेत्रो में भी हुई।

'व्यक्तिगत सत्याग्रह' में भी बुन्देलखण्ड क्षेत्र पीछे नहीं रहा। इस में बुन्देलखण्ड क्षेत्र के केन्द्र झांसी में जिला कांग्रेस के निर्वाचित अध्यक्ष बाबू कालिका प्रसाद अग्रवाल तथा महामंत्री पं0 राम सहाय शर्मा थे। इस व्यक्तिगत सत्याग्रह में सत्याग्रहियों की लंबी पंक्ति इस क्षेत्र में भी तैयार हो गयी। इसमें सर्वप्रामि लक्ष्मण राव कदम, कालिका प्रसाद अग्रवाल, पन्ना लाल शर्मा, शहर कांग्रेस अध्यक्ष सीताराम भागवत, डॉ0 यशवंत राव माटे, राम गोपाल शास्त्री गिरफ्तार कर लिया गए। इसी आन्दोलन की कड़ी में सर्व श्री रघुनाथ धुलेकर, आत्माराम गोविंद खेर, कुंज बिहारी शिवानी, रामेश्वर प्रसाद शर्मा, कृष्ण गोपाल शर्मा, काली चरण निगम मास्टर छेदी लाल, सेइ मुरलीधर अग्रवाल, पुरूषोत्तम नारायण जोशी, मैथिलीशरण गुप्त, कृष्ण गनेश खान बल्कर, राम किशोर शास्त्री, श्री निवास गुप्त आदि गिरफ्तार कर लिए गए। झांसी शहर से 84 नामों की सूची थी। सभी को नौ माह की जेल व सौ रू0 जुर्माना हुआ।[15]

उपरोक्त उदाहरण तो मात्र बांगी भर है। क्षेत्र के सत्याग्रहियों के व्यक्तित्व तथा कृतित्व को कुछ पन्नो में समेट कर कठिन कार्य है परन्तु इनसे स्पष्ट हो जाता है कि बुन्देलखण्ड की स्वतंत्रता प्रिय है–गौरवपूर्ण ऐतिहासिक परम्परा आधुनिक कार्य में भी निरन्तर बनी रही है। आवश्यकता मात्र उन बिखरे उदाहरणों को समेटने की तथा उन्हे प्रकाश में लाने की है। इस दिशा में मीडिया एक सशक्त माध्यम बन सकता है। जिसने आधुनिक काल में सभी वर्गो और क्षेत्रों पर अपना वर्चस्व जमा लिया है। वर्तमान में हिट होती ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की फिल्में तथा सीरियल इसके प्रत्यक्ष प्रमाण है।

सन्दर्भ :

1. सच्चिदानन्द भट्टाचार्य–भारतीय इतिहास कोष, राजर्षि पुरूषोत्तमदास टण्डन, हिन्दी भवन, महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ 1976, पृष्ठ–330
2. डॉ0 रमेश चन्द्र श्रीवास्तव–बुन्देलखण्ड साहित्यिक ऐतिहासिक सांस्कृतिक वैभव, पृष्ठ–26
3. वही
4. वीणावादिनी–सरस्वती पाठ्शाला–हीरक जयंती विशेषांक 1991–92 पृष्ठ – 4, 5
5. जानकी शरण वर्मा–अमर बलिदानी पृष्ठ–200
6. बुन्देलखण्ड दर्पण, द्वाद्वश बिम्ब, आयुर्वेद झांसी महोत्सव, 2004
7. झांसी गजेटिया–ई0वी0 जोशी, गजेटियर विभाग लखनऊ 1995 पृष्ठ 72–73
8. बुन्देलखण्ड शोध संस्थान, लक्ष्मी व्यायामशाला, झांसी उ0प्र0–रामचरण हयारण प्रकाशित घासीराम व्यास, पृष्ठ 20–21
9. बांदा गजेटियर–दंगली प्रसाद वरूण, प्रकाशक–गवर्नमेण्ट ऑफ द उ0प्र0 लखनऊ 1981 पृष्ठ 62
10. जानकी शरण वर्मा–अमर बलिदानी पृष्ठ 215
11. डॉ0 रमेश चन्द्र श्रीवास्तव– बुन्देलखण्ड साहित्यिक ऐतिहासिक सांस्कृतिक वैभव पृष्ठ 25
12. जानकी शरण वर्मा–अमर बलिदानी पृष्ठ 202
13. भगवानदास माहौर–यश की धरोहर, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली 1985 पृष्ठ 184
14. कामद क्रांति–चन्द्रधर द्विवेदी, प्रयाग प्रकाशन पृष्ठ 59–60
15. बुन्देलखण्ड दर्पण–झांसी महोत्सव 1998 षष्ठ बिम्ब लेखक–विजय शंकर सिंह (डिविजनल वार्डन, सिविल डिफेन्स झांसी) पृष्ठ 61